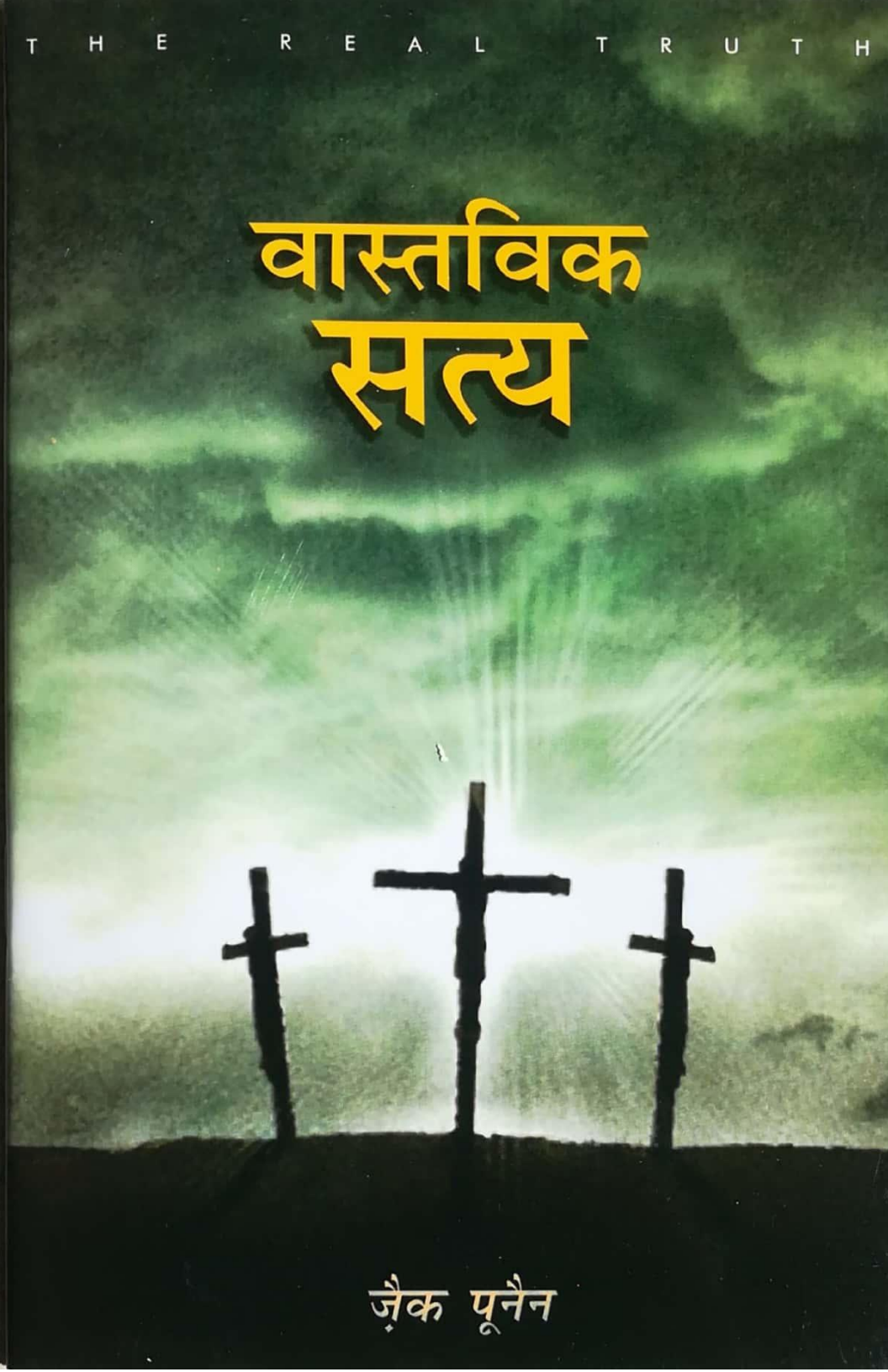
THE REAL TRUTH

वास्तविक सत्य



ज़ैक पूनैन

वास्तविक सत्य

जैक पूनैन

प्रकाशक

मसीही साहित्य संस्था

70 जनपथ, नई दिल्ली-110001

THE REAL TRUTH
by
Zac Poonen

Copyright – Zac Poonen (1999)

This book has been copyrighted to prevent
misuse. It should not be reprinted or translated
without written permission from the author.

All scripture unless otherwise stated are taken from the
New American Standard Bible versions 1960, 1962, 1963,
1968, 1971, 1972, 1973, 1975, 1977 1995
by the Lockman Foundation. Used by Permission.

For further details Please contact:
Christian Fellowship Centre
40 DaCosta Square,
Bangalore – 560084, India
cfc@cfcindia.com, www.cfcindia.com
Tele: +91-080-25477103, Fax: 080-51251291
Or
Pune Christian Fellowship Church
B-21, B U Bhandari Greens, Dhanori,
Pune - 411015, India.
Tele: +91-98500 67885, 86552 02001, (020) 27029027
Email: reachpunecfc@gmail.com

Printed & Published by
MASIHI SAHITYA SANSTHA
70 Janpath, New Delhi - 110001
Ph: 011-23320253, 23320373
E-mail: mssjanpath@gmail.com

विषय-सूची

अध्याय **पृष्ठ सं.**

1. बुराई के बारे में वास्तविक सत्य..... 5
2. पाप के बारे में वास्तविक सत्य 13
3. हमारे विवेक के बारे में वास्तविक सत्य..... 20
4. क्षमा के बारे में वास्तविक सत्य..... 24
5. मन-फिराव के बारे में वास्तविक सत्य..... 30
6. विश्वास के बारे में वास्तविक सत्य 36
7. उद्धार के बारे में वास्तविक सत्य..... 41
8. अनन्त के बारे में वास्तविक सत्य..... 49

अध्याय 1

बुराई के बारे में वास्तविक सत्य

एक सबसे बड़ा रहस्य जिसे संसार में लोगों ने समझने की कोशिश की है, वह बुराई का रहस्य है। एक सर्वज्ञानी और भले परमेश्वर द्वारा रचे गए संसार में बुराई कैसे आ गई?

संसार में हरेक जगह बुराई क्यों प्रबल रहती है? और सभी जगह क्यों इतनी बीमारी, ग़रीबी, दुःख और पीड़ा है? क्या हमारी मदद करने में परमेश्वर की कोई दिलचस्पी नहीं है? ये ऐसे सवाल हैं जिनका जवाब दिया जाना ज़रूरी है। और बाइबल हमें इसका जवाब देती है।

लेकिन इससे पहले कि हम आगे बढ़ें, हमें परमेश्वर के बारे में कुछ तथ्यों में स्पष्ट होना ज़रूरी है।

परमेश्वर का अस्तित्व अनादि से है। उसका कोई आरम्भ नहीं है, क्योंकि वह उस परिमण्डल से बाहर है जिसे हम समय के रूप में जानते हैं। यह समझना हमारे लिए शायद मुश्किल हो सकता है। लेकिन इसकी वजह सिर्फ यही है कि हमारे मन में परमेश्वर की बुद्धि नहीं समा सकती - वैसे ही जैसे एक प्याले में समुद्र का पानी नहीं समा सकता।

बाइबल का सबसे पहला पद इस तरह से शुरू होता हैः

“आदि में परमेश्वर...” (उत्पत्ति अध्याय 1, पद 1)। (परमेश्वर के वचन बाइबल में, उत्पत्ति उसकी 66 पुस्तकों में पहली पुस्तक है।

इस पुस्तिका में कोष्ठक में दिए गए उल्लेख बाइबल की किसी-न-किसी पुस्तक का हवाला देते है।)

परमेश्वर का अस्तित्व हमेशा से है, और बाइबल इस वास्तविकता की व्याख्या करने की कोशिश भी नहीं करती। वह इसे बस एक वास्तविकता के रूप में व्यक्त करती है।

बाइबल में परमेश्वर इस रूप में प्रकट किया गया है जो हम मनुष्यों के साथ एक व्यक्तिगत सम्बंध चाहता है। वह कोई मनुष्य नहीं है, जैसा कि हम दूसरे मनुष्यों को जानते हैं। वह आत्मा है, हर प्रकार से असीम और अपने चरित्र में कभी-न-बदलने-वाला। वह सर्वसामर्थी है, सर्वज्ञानी है, असीम रूप में बुद्धिमान है, असीम रूप में प्रेम करने वाला है, और एक असीम रूप में शुद्ध/पवित्र है।

परमेश्वर का असीम प्रेम पूरी तरह से निःस्वार्थ है। इसलिए उसने आरम्भ से ही उसने अपना आनन्द और हर्ष दूसरों के साथ बाँटना चाहा है।

इसलिए उसने सजीव प्राणी बनाए। सबसे पहले उसने करोड़ों स्वर्गदूतों की रचना की जिससे कि वह उनके साथ अपनी महिमा और प्रसन्नता बाँट सके। यह किसी मनुष्य के रचे जाने से बहुत पहले की बात है।

स्वर्गदूतों में, परमेश्वर ने एक स्वर्गदूत को उनके प्रधान होने के लिए रचा। उसका नाम लूसीफर था। यह नाम, हालांकि अब एक बुरा नाम माना जाता है, एक समय में सबसे वैभवशाली, सबसे बुद्धिमान और सबसे सुन्दर स्वर्गदूत का नाम था। वह सभी स्वर्गदूतों का मुखिया था। लूसीफर के बारे में प्रभु ने कहाः

“तुझ पर सिद्धता की छाप लगी थी, तू बुद्धि से परिपूर्ण और सर्वान्ग सुन्दर था... अपने सृजे जाने के दिन से लेकर जब तक

कि तुझ में कुटिलता न पाई गई, तू अपने आचरण में निर्दोष रहा" (यहेज़केल अध्याय 28, पद 12-15)।

परमेश्वर द्वारा रचे गए तारे व वृक्ष यह नहीं कर सकते थे, लेकिन लूसीफर और दूसरे स्वर्गदूतों के पास चुनाव करने की एक मुक्त इच्छा थी, जिसमें वे परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने या उसे तोड़ने का चुनाव कर सकते थे।

मुक्त इच्छा वह पहली मूल बात है जिसके आधार एक व्यक्ति एक नैतिक जीव हो सकता है। तारे व वृक्ष न तो कुछ भला और न ही कुछ बुरा कर सकते हैं क्योंकि वे अपने लिए कोई चुनाव नहीं कर सकते। वे एक प्राकृतिक रूप में परमेश्वर के नियमों का पालन करते हैं क्योंकि वे चुनाव करने की आज़ादी के साथ नहीं रचे गए हैं। और यही वजह है कि वे परमेश्वर के पुत्र भी नहीं हो सकते। एक वैज्ञानिक द्वारा बनाया गया यन्त्र (रोबोट) उन सारी आज्ञाओं का पालन कर सकता है जो एक यान्त्रिक रूप में उसमें अंदर रख दी जाती हैं, और वह कभी शिकायत भी नहीं करेगा - जैसे उस वैज्ञानिक का अपना पुत्र करेगा! लेकिन वह यान्त्रिक मानव फिर भी कभी उसका पुत्र नहीं बन सकेगा!

एक व्यक्ति को एक नैतिक जीव बनाने वाला दूसरा मूल तत्व विवेक है। पशु व पक्षी स्वेच्छा से कुछ करने का चुनाव कर सकते हैं। लेकिन फिर भी वे नैतिक जीव नहीं होते क्योंकि उनमें विवेक नहीं होता। वे न तो पापी हो सकते हैं और न ही पवित्र हो सकते हैं। इसलिए वे परमेश्वर की संतान नहीं हो सकते क्योंकि परमेश्वर एक नैतिक जीवात्मा है।

वे पशु और पक्षी तो आपकी संतान भी नहीं हो सकते।

आप एक कुत्ते को आपकी सब आज्ञाएं मानने के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं। लेकिन वह कुत्ता कभी आपका पुत्र नहीं बन सकता

क्योंकि यह ज़रूरी है कि आपके पुत्र में आपका स्वभाव हो - और आपके कुत्ते में वह नहीं होता।

लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को अपनी समानता में बनाया है। इससे हमारे लिए उसकी संतान बनना सम्भव हो जाता है। विवेक हमारे अन्दर की आवाज़ है जो हमें यह याद दिलाती है कि हम नैतिक जीव हैं, और जब हम परमेश्वर के नियमों को भंग करते हैं, तो विवेक हमें दोषी ठहराता है।

स्वर्गदूत एक मुक्त इच्छा और विवेक के साथ रचे गए थे। इस तरह, वे परमेश्वर की सृष्टि में उस समय एक अनोखी रचना थे क्योंकि वे नैतिक जीवात्माएं थीं। लेकिन फिर स्वर्गदूतों के प्रधान लूसीफर में ऐसे विचार और महत्कांक्षा पैदा हुए जो अच्छे नहीं थे। इस सृष्टि में सबसे पहले बुराई वहाँ शुरू हुई थी।

लूसीफर के अन्दर ऐसे विचार और महत्वकांक्षा पनपने लगे जो न सिर्फ बुरे थे, बल्कि वे घमण्ड, विद्रोह और असंतोष से भरे थे।

उस समय तक सारी सृष्टि एक सिद्ध रूप में शुद्ध थी। लेकिन अब एक सृजी हुई रचना के हृदय में, जिसे मुक्त इच्छा के साथ रचा गया था, बुराई ने अपना फन फैलाना शुरू किया।

यह याद रखें कि सबसे पहले बुराई की शुरूआत हृदय में हुई थी। शुरू में कोई बाहरी काम नहीं था। और आज भी, बुराई का आरम्भ हृदय में ही होता है।

और यह भी याद रखें कि सबसे पहला पाप जिसके द्वारा संसार में बुराई ने प्रवेश किया, वह घमण्ड था। तब परमेश्वर ने लूसीफर को अपनी प्रत्यक्ष उपस्थिति में से निकाल दिया। और उस क्षण के बाद से लूसीफर शैतान कहलाया।

बाइबल शैतान के पतन का इस तरह बयान करती हैः

“हे भोर के तारे, हे ऊषाकाल के पुत्र, तू शक्तिशाली होते हुए भी आकाश से कैसे नीचे गिरा!... तूने अपने मन में कहा था, ‘मैं आकाश पर चढ़ूँगा, मैं परमेश्वर के तारों से भी ऊपर अपना सिंहासन स्थापित करूँगा। मैं बादलों से भी ऊँचे स्थान पर चढ़ूँगा, मैं सर्वोच्च परमेश्वर के तुल्य बनूँगा। फिर भी तू अधोलोक में, हाँ, उस गड्ढे की गहराइयों तक उतारा जाएगा” (यशायाह अध्याय 14, पद 12-15)।

लेकिन जब तक लूसीफर को निकाला गया, तब तक उसने अपने विद्रोह में और भी स्वर्गदूतों को शामिल कर लिया था। उसके साथ करोड़ों दूत - असल में स्वर्ग के एक-तिहाई दूत मिल गए थे (जैसा कि प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 के पद 4 में पढ़ते हैं)। इसलिए परमेश्वर ने लूसीफर के साथ उन्हें भी निकाल दिया। ये गिराए गए दूत आज वे दुष्टात्माएं हैं जो लोगों को सताती हैं।

शायद आप स्वयं दुष्टात्माओं द्वारा सताए गए हों, या दूसरे लोगों ने आपके ऊपर जादू-टोन्हा किया हो। अगर ऐसा है, तो बाइबल में आपके लिए अच्छी ख़बर है। आप हमेशा के लिए उनके द्वारा सताए जाने से मुक्त हो सकते हैं।

इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ते रहें, और जब आप इसके अंत तक पहुँचेंगे, तो आप यह देख सकेंगे कि परमेश्वर आपके लिए कैसे चमत्कार कर सकता है।

कुछ लोग अब यह सवाल कर सकते हैं, "अगर इस जगत में फैली सारी बुराई की जड़ शैतान है, तो परमेश्वर शैतान और सारी दुष्टात्माओं का नाश क्यों नहीं कर देता?”

परमेश्वर अगर ऐसा करना चाहे तो वह एक पल में यह कर सकता है।

लेकिन वह ऐसा नहीं करता।

इससे यह साबित होता है कि परमेश्वर की असीम बुद्धि के अनुसार शैतान और दुष्टात्माओं को बने रहने की अनुमति देने में परमेश्वर का कुछ उद्देश्य है। उस उद्देश्य का एक हिस्सा तो इस पृथ्वी पर मनुष्य के जीवन को कठिन, असुरक्षित, और ख़तरनाक बना देना है कि लोग परमेश्वर की तरफ मन फिराएं, और इस पृथ्वी पर अपने लिए सुख-सुविधाएं खोजने की बजाय अनन्त के बारे में सोचें।

अगर पृथ्वी पर जीवन बहुत आरामदेह होता - कोई बीमारी, तकलीफ़, ग़रीबी या दुःख न होता, तो शायद कोई कभी परमेश्वर के बारे में न सोचता। इसलिए परमेश्वर इस पृथ्वी के जीवन की सारी पीड़ा और असुरक्षा को हमें परमेश्वर के बारे में सोचने वाला और हमारी ज़रूरत के समय उसकी तरफ मन फिराने वाला बनाती हैं।

आपके जीवन में शैतान द्वारा लाई जाने वाली समस्याओं, बीमारियों और परीक्षाओं को आने की अनुमति एक प्रेमी परमेश्वर द्वारा इसलिए दी जाती है कि आप अपना मन उसकी तरफ फिरा सकें। इस भावार्थ से, वे आपके लिए परमेश्वर के प्रेम की एक अभिव्यक्ति होती हैं।

यह बाइबल का संदेश है।

मैंने एक ऐसे व्यापारी की कहानी पढ़ी जो एक समय में परमेश्वर की नज़दीकी में रहता था। फिर जैसे-जैसे वह उसके व्यापार में सफल होने लगा, वैसे-वैसे वह परमेश्वर से दूर होता गया। उसकी कलीसिया के प्राचीन उससे अक्सर बात करते और उसे प्रभु के पास लौटा ले आने की कोशिश करते रहते थे। लेकिन वह अपने काम में बहुत व्यस्त हो गया था। एक दिन एक ज़हरीले सर्प ने उसके तीन लड़कों में से सबसे छोटे लड़के को डस लिया, और वह

लड़का गंभीर रूप में बीमार पड़ गया। डॉक्टरों ने भी सारी उम्मीद छोड़ दी थी। तब उसका पिता बहुत चिंतित हो उठा और उसने कलीसिया के एक अगुवे को बच्चे के लिए प्रार्थना करने को बुलाया। प्राचीन एक समझदार व्यक्ति था। वह आया और उसने प्रार्थना की, “प्रभु, इस बच्चे को काटने के लिए उस सर्प को भेजने के लिए मैं तुझे धन्यवाद देता हूँ, क्योंकि इस परिवार को तेरे पास लाने की सारी कोशिशें नाकाम हो चुकी थीं। लेकिन जो काम मैं 6 सालों में न कर सका, वह उस सर्प ने एक ही क्षण में कर दिया! और अब जबकि इस परिवार ने अपना पाठ सीख लिया है, तो हे प्रभु, अब इस बच्चे को चंगा कर दे। और ऐसी कृपा का दान दे दे कि इन्हें तुझे याद करने वाला बनाने के लिए और साँपों की ज़रूरत न पड़े।"

कुछ ऐसे लोग होते हैं कि जब तक एक दिन उन्हें अचानक कैंसर या किसी दूसरी गंभीर बीमारी के साथ अस्पताल नहीं ले जाया जाता, तब तक वे परमेश्वर के बारे में कभी नहीं सोचते। फिर, अचानक ही उन्हें परमेश्वर याद आ जाता है और वे उद्धार पाने के लिए उसकी तरफ मन फिराते हैं। परमेश्वर ने असाध्य रोग, बीमारियाँ, ग़रीबी, और इस संसार की दूसरी बहुत सी बुराइयों को इस्तेमाल किया है कि उनके द्वारा लोग अपने पापों से मन फिरा सकें। और इस तरह परमेश्वर स्वर्ग में उनके अनन्त निवासों तक पहुँचने में उनकी अगुवाई करता है।

इस तरह, परमेश्वर लोगों को शैतान के शिकंजे से छुड़ाने, और उन्हें अनन्त उद्धार में पहुँचाने के लिए शैतान की बुराइयों को इस्तेमाल करता है।

परमेश्वर बार-बार इस तरीक़े से शैतान को मूर्ख साबित करता रहता है। जो गड्ढा शैतान दूसरों के लिए खोदता है, उसमें उसे ही गिरना पड़ता है।

शैतान का अस्तित्व बने रहने देने की एक और वजह यह है कि इससे परमेश्वर के बच्चे शुद्ध किए जाते हैं।

आग के उदाहरण पर विचार करें। हम जानते हैं कि जगत के इतिहास में लाखों लोग आग में जलकर मरे हैं। फिर भी इस वजह से कोई आग का इस्तेमाल करना नहीं छोड़ देता। क्यों? क्योंकि आग से खाना पकता है, और मोटर-कारें, हवाई जहाज़ और मशीनें चलती हैं। सोना भी सिर्फ आग द्वारा ही शुद्ध किया जा सकता है। इसलिए आग, हालांकि हानिकारक और ख़तरनाक होती है, फिर भी वह अच्छे कामों के लिए इस्तेमाल की जा सकती है।

इसी तरह, हालांकि शैतान बुरा है और लोगों को धोखा देकर भटकाता है, फिर भी परमेश्वर उसको इस्तेमाल कर सकता है। शैतान को यह अनुमति दी जाती है कि वह परमेश्वर के बच्चों को अग्निमय परीक्षाओं और प्रलोभनों द्वारा परखे कि वे वैसे ही पवित्र और शुद्ध हो जाएं जैसा सोना आग में परखे जाने के बाद शुद्ध हो जाता है।

इस तरह, हम देखते हैं कि हालांकि परमेश्वर संसार में फैली बुराई को एक ही क्षण में मिटा सकता है, फिर भी वह ऐसा नही करता, क्योंकि उन सभी के द्वारा वह अपने महिमामय उद्धेश्य पूरे कर रहा है।

अध्याय 2

पाप के बारे में वास्तविक सत्य

कुछ मनुष्य पशुओं की तरह क्यों व्यवहार करते हैं?

इसका जवाब यह हैः इसलिए क्योंकि उनकी दिलचस्पी सिर्फ उनकी शारीरिक ज़रूरतों में और उनके इस पृथ्वी के अस्तित्व में ही होती है।

एक पशु की दिलचस्पी किन बातों में होती है? खाना, सोना और लैंगिक सम्भोग का संतोष।

लेकिन परमेश्वर ने मनुष्य को पशु जैसा होने के लिए नहीं बनाया है। उसने हमें उसके जैसा होने के लिए बनाया है - नैतिक और खरे, ऐसे चरित्रवान मनुष्य जिनमें आत्म-संयम है, जो पाशविक आवेगों के गुलाम नहीं हैं।

यह हक़ीक़त कि हम पशुओं से ज़्यादा चतुर हैं और उनसे ज़्यादा शिक्षित हैं, हमें उनसे बेहतर नहीं बना देती! चतुर और शिक्षित लोग भी लालच, स्व-केन्द्रीयता, लैंगिक कामुकता, क्रोध आदि के गुलाम होते हैं।

हमारा एक भाग ऐसा है जो हमारे मनों से ज़्यादा गहरा है, और वह हमारी आत्मा है। हमारी आत्मा हमें परमेश्वर के प्रति जागरूक करती है। किसी पशु के पास यह नहीं है।

जैसा कि हमने पिछले अध्याय में देखा, कि परमेश्वर ने हमें ऐसे नैतिक जीवात्माओं के रूप में रचा है जिनके पास चुनाव करने की आज़ादी है। लेकिन चुनाव करने की इस आज़ादी में यह ख़तरा भी

रखा है कि हम इस आज़ादी को अपने आपको प्रसन्न करने के लिए और परमेश्वर के नियमों को तोड़ने के लिए भी इस्तेमाल कर सकते हैं। लेकिन परमेश्वर यह ख़तरा उठाने के लिए तैयार था, क्योंकि वह ऐसे बच्चे चाहता था जो उनकी स्वेच्छा से उसे चुनने वाले हों।

संसार में फैली सारी अराजकता, गड़बड़, बीमारियों और बुराई की सीधी वजह मनुष्य द्वारा परमेश्वर की आज्ञाओं को तोड़ना और शैतान की बात को मानना है।

परमेश्वर ने सबसे पहले जिस पुरुष व स्त्री की रचना की वे आदम और हव्वा कहलाए। उनकी रचना के समय वे अबोध थे। और पवित्र होने के लिए उन्हें चुनाव करना था। और चुनाव करने के लिए, उन्हें प्रलोभित होना ज़रूरी था कि वे बुराई से इनकार करें और उसकी जगह परमेश्वर को चुनें। इसलिए परमेश्वर ने शैतान को यह अनुमति दी कि वह आकर उन्हें परखे। हम इसके बारे में उत्पत्ति अध्याय 2 व 3 में पढ़ते हैं।

अबोधता और पवित्रता में बहुत फ़र्क होता है। अबोधता वह होती है जो हम एक बच्चे में देखते हैं। अगर आप यह जानना चाहते हैं कि उसकी रचना के समय आदम कैसा था, तो एक छोटे बच्चे को देखें - वह अबोध, और भले और बुरे से अनजान होता है। लेकिन वह बच्चा न तो पवित्र होता है और न ही सिद्ध होता है। सिद्ध होने के लिए, उस बच्चे को बड़ा होना पड़ेगा, और उसे कुछ चुनाव करने पड़ेंगे, बुराई से इनकार करना पड़ेगा और परमेश्वर को चुनना पड़ेगा।

जब हम अपने मन में प्रलोभन के आगे झुकने से इनकार करते हैं, तब हम अपना चरित्र विकसित करते हैं। आप अपने जीवन में

आज जो हैं, वह उन चुनावों की वजह से हैं जो आपने आज तक अपने जीवन में किए हैं।

अगर आपके आसपास के लोग आज आपसे बेहतर हैं, तो उसकी वजह यह है कि उन्होंने अपने जीवन में आपसे बेहतर चुनाव किए हैं। हम सभी प्रतिदिन अपने जीवनों में चुनाव करते हैं - और ये चुनाव ही यह तय करते हैं कि हम अंततः क्या बनेंगे।

जब परमेश्वर ने पहले स्त्री व पुरुष की रचना की, तब उसने उन्हें शैतान द्वारा परखे जाकर पवित्र बनने का मौक़ा दिया था। उसने उन्हें एक वाटिका में रखकर उनसे यह कहा था कि वे पूरी वाटिका में से एक वृक्ष के फल को छोड़ बाक़ी हरेक वृक्ष का फल खा सकते थे। यही उनकी परीक्षा थी।

असल में, यह एक बड़ी आसान परीक्षा थी - क्योंकि वे एक ऐसी वाटिका में रखे गए थे जहाँ हज़ारों मनोहर वृक्षों में रसीले फल लगे हुए थे, और उनसे यह कहा गया था कि वे एक वृक्ष के अलावा बाक़ी हरेक वृक्ष का फल खा सकते थे। लेकिन वे आज्ञापालन की उस आसान परीक्षा में नाकाम हो गए थे।

क्योंकि शैतान ने वाटिका में आकर यह कहते हुए आदम और हव्वा को बहकाया था कि अगर वे उस वर्जित वृक्ष का फल खाएंगे, तो वे परमेश्वर के समान हो जाएंगे। उस समय आदम और हव्वा के सामने जो प्रलोभन था, वह सिर्फ एक वृक्ष का फल खाने जैसा आसान मामला नहीं था, बल्कि यह कि अगर वे चाहें तो वे परमेश्वर के समान हो सकते थे।

यह वही बात थी जो स्वयं शैतान ने एक समय अपने लिए चाही थी। और उसने आदम और हव्वा से भी यही कहा कि वे भी वैसे ही बन सकते थे। निश्चय ही, शैतान ने उनसे एक झूठ बोला था, वैसा ही एक झूठ जिसमें वह आज भी लोगों को भरमाता है। जैसे

आज लोग शैतान के झूठ में फँसते हैं, आदम और हव्वा भी वैसे ही उसके झूठ में फँसे थे। उन्होंने परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ा और पहले जो दशा शैतान की हुई थी, वही उनकी भी हुई। उन्हें परमेश्वर की उपस्थिति में से निकाल दिया गया।

उस घटना का सारा विवरण बाइबल की पहली पुस्तक में पढ़ा जा सकता है - उत्पत्ति के अध्याय 3 में।

आदम और हव्वा ने सोचा था परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करने द्वारा वे स्वयं परमेश्वर जैसे हो जाएंगे - सर्व-सामर्थी और मुक्त। लेकिन क्या वे मुक्त हो गए थे? नहीं! वे शैतान के दास बन गए थे। सिर्फ परमेश्वर की आज्ञा का पालन करने द्वारा ही हम वास्तव में मुक्त हो सकते हैं।

शैतान यहीं बहुत से लोगों को भरमा देता है। वह उन्हें बताता है कि अगर वे वास्तव में जीवन का आनन्द मनाना चाहते हैं, तो उन्हें परमेश्वर के नियमों को अनदेखा कर देना चाहिए।

अब हमने देख लिया है कि मानव-जाति में कैसे पाप की शुरूआत हुई थी।

आदम और हव्वा ने उस दिन अदन की वाटिका में एक बहुत ही महत्वपूर्ण फैसला किया था। उस फैसले के नतीजे उनके और उनके बच्चों को जीवन भर भोगने पड़े।

हम अपने जीवन में जो भी फैसले करते हैं, उनके कुछ नतीजे होते हैं। हम जो बोते हैं वही काटते हैं। और बहुत बार, हमारे बोए हुए के कड़वे फल हमारे बच्चों को भी काटने पड़ते हैं। आदम के मामले में, उसे और उसकी पत्नी को उनके जीवन-भर के लिए परमेश्वर की उपस्थिति में से निकल जाना पड़ा था।

इसलिए हम यह न मान लें कि जो चुनाव आज हम अपने जीवनों में करते हैं वे महत्वपूर्ण नहीं हैं, या हम जो आज बो रहे हैं उनकी

कटनी हमें भविष्य में नहीं काटनी पड़ेगी। परमेश्वर विभिन्न लोगों और विभिन्न परिस्थितियों द्वारा हमें परखे जाने की अनुमति इसलिए देता है, कि हम परमेश्वर के सम्मुख यह साबित कर सकें कि हम पृथ्वी पर सबसे बढ़कर परमेश्वर को ही चाहते हैं। हमारे हरेक परीक्षा में से गुज़रने का यही उद्देश्य होता है - यह परखना कि क्या हम सृजनहार को सभी सृजी हुई वस्तुओं से ज़्यादा मूल्यवान जानते हैं या नहीं।

सारे पाप का मूल उस चुनाव में होता है जिसमें हम परमेश्वर से बढ़कर सृजी हुई वस्तुओं को और अपने आपको चुन लेते हैं। यह परमेश्वर के तरीक़े को छोड़ अपने ही तरीक़े को चुन लेना होता है। यह परमेश्वर को प्रसन्न करने की इच्छा की बजाय अपने आपको प्रसन्न करने की इच्छा करना होता है।

पाप कोई व्यभिचार, हत्या या चोरी करना ही नहीं होता। वह अपनी मनमानी करना होता है। हम पाप की शुरूआत को एक बच्चे में भी देख सकते हैं। हरेक बच्चे के जन्म से ही पाप उसके स्वभाव में बसा होता है, और जैसे-जैसे वह बड़ा होता है, वैसे-वैसे वह अपनी मनमानी करने वाला बनता जाता है, और जो वह चाहता है, वह पाने के लिए वह दूसरे बच्चों से छीनता है और उनसे लड़ता है।

जब हम बड़े होकर परिपक्व पुरुष बन जाते हैं, तब भी हममें कोई ख़ास फ़र्क नहीं पड़ता, हम अपने बचपन जैसे ही होते हैं। बस हम ज़्यादा चतुर हो जाते हैं और अपने तरीक़े बदल लेते हैं! बहुत सभ्य/सुसंस्कृत लोग भी बिलकुल ऐसे ही होते हैं। वे शालीनता के एक बाहरी आवरण या धर्म द्वारा अपनी स्वकेन्द्रीयता, अपने लालच और अपनी लालसाओं को छुपाए रखते हैं!

पाप हमारे जीव के हरेक ताने-बाने में रच-बस गया है। हम प्रार्थना व उपवास जैसे धार्मिक कामों या तीर्थ-यात्रओं और आत्म-संयम जैसी बातों द्वारा पाप से मुक्त नहीं हो सकते।

लेकिन परमेश्वर को तब तक इंतज़ार करना पड़ता है जब तक हम पाप को एक बुराई के रूप में नहीं जान लेते। यीशु ने एक बार कहा था कि वह "धर्मियों" को नहीं पापियों को बुलाने के लिए आया था। इसका अर्थ यह नहीं है कि पृथ्वी पर कुछ लोग धर्मी और कुछ लोग पापी थे। यह उसने एक व्यंग्यात्मक शैली में उन धार्मिक लोगों के लिए बोला था जो उनकी अपनी नज़र में धर्मी थे और अपने आपको पवित्र समझते थे। यीशु के कहने का अर्थ यही था कि वह ऐसे लोगों का उद्धार नहीं कर सकता जो अपने आपको "धर्मी" समझते थे।

सिर्फ वे लोग ही एक वैद्य/डॉक्टर के पास जाते हैं जो यह जान लेते हैं कि वे बीमार हैं। इसी तरह हमारी सबसे पहली ज़रूरत यह जानना है कि हम पापी हैं।

हमारा धर्म चाहे जो भी हो, हम सभी पापी हैं। हम सभी ने परमेश्वर के पवित्र नियमों को तोड़ा है -अपने विचार, शब्द, काम, मनोभाव और उद्देश्य में।

हम परमेश्वर के पवित्र मापदण्डों पर खरे नहीं उतरते।

रोग हमारी देह का जितना नुक़सान नहीं करते, उससे ज़्यादा पाप हमारी आत्मा का नुक़सान करता है।

लेकिन क्या हम यह जानते हैं?

एड्ज़ के प्रति हमारी क्या प्रतिक्रिया होती है - वह भयानक रोग जो आज यौन सम्बंधों द्वारा संक्रामक रूप में फैलता जा रहा है?

एड्ज़ इतना संक्रामक है कि लोग इसके रोगियों के पास आने से भी डरते हैं। पाप असल में इससे भी ज़्यादा बुरा है - दोनों में यह फर्क़ है कि पाप हमारी आत्माओं को नुक़सान पहुँचाता है। इसलिए उसके द्वारा होने वाला नुक़सान बाहरी तौर पर नज़र नहीं आता। लेकिन पाप का प्रभाव एड्ज़ से ज़्यादा बुरा होता है। पाप हमारे जीवनों को बर्बाद कर देता है, वह इस संसार में हमें दुःख देता है और, अगर हमें इससे बचाया नहीं गया, तो अंततः यह हमारा अनन्त विनाश करता है।

अध्याय 3

हमारे विवेक के बारे में वास्तविक सत्य

हम सभी की रचना एक विवेक के साथ की गई है जो हमें लगातार यह याद दिलाता है कि हम नैतिक जीवात्माएं हैं। विवेक हमारे अन्दर स्वयं परमेश्वर की आवाज़ है जो हमें बताती है कि हम अपने कामों के प्रति जवाबदार हैं। हमने अपने जीवन किस तरह व्यतीत किए हैं, इसका जवाब हमें एक दिन परमेश्वर को देना होगा।

हम पशुओं की तरह नहीं हैं जिनके पास विवेक नहीं होता। पशु नैतिक जीवात्माएं नहीं हैं इसलिए उन्हें किसी बात के लिए परमेश्वर को जवाब नहीं देना है। जब एक पशु मरता है, तो उसकी कहानी पूरी हो जाती है। लेकिन हमारे लिए ऐसा नहीं है। मनुष्य परमेश्वर के स्वरूप व समानता में बनाया गया है और वह एक अनन्त जीवात्मा है।

हमारे लिए एक न्याय का दिन तय किया गया है। हमने अपने पूरे जीवन में जो कुछ भी बोला और सोचा है, वह हमारे मनों में याद दिलाया जाएगा, और परमेश्वर उसका मूल्यांकन करेगा। और वह बाइबल में दिए उसके पवित्र नियमों के अनुसार हमारा न्याय करेगा। और तब हमें अपने हरेक काम, शब्द और विचार का उसे लेखा देना होगा।

बाइबल कहती है, "मनुष्य का एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना तय किया गया है" (इब्रानियों अध्याय 9, पद 27)। पृथ्वी पर बहुत से लोग अपने अपराधों की सज़ा पाने से बच जाते हैं। लेकिन जब वे परमेश्वर के न्यायासन के आगे खड़े होंगे, तब उनका सत्यचा न्याय किया जाएगा। इसी तरह, ऐसे भी बहुत लोग हैं जिन्होंने इस पृथ्वी पर दूसरों के साथ जो भलाई की है, उसकी न तो कोई सराहना की गई है और न ही उन्हें उसका कोई प्रतिफल मिला है। वे मसीह के पृथ्वी पर लौटने के समय अपना प्रतिफल पाएंगे।

हम जो कुछ भी करते हैं, क्योंकि हमें एक दिन उसका परमेश्वर को जवाब देना है, इसलिए यह ज़रूरी है कि हम हमेशा अपने विवेक की आवाज़ को सुनते रहें।

विवेक परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दिए गए सर्वश्रेष्ठ उपहारों में से एक है। वह हमारी देह में "पीड़ा" के उपहार की तरह है। हममें से ज़्यादातर लोग पीड़ा को एक परेशान करने वाली बात समझते हैं। लेकिन हम यह नहीं जानते कि वह हमारे जीवनों के लिए कितनी ज़बरदस्त आशिष है। क्योंकि पीड़ा के द्वारा ही हमारी देह हमें बताती है कहीं कुछ ख़राबी आ गई है। वह हमारी देह में से आने वाला बीमारी का पहला संकेत होता है। अगर पीड़ा न होती, तो हमें शायद किसी बीमारी के होने के बारे में पता भी न चल पाता और हम मर सकते थे। पीड़ा हमें समय से पहले मरने से बचाए रखती है।

कोढ़ी लोगों को पीड़ा का अहसास नहीं होता, क्योंकि कोढ़ नसों को ख़त्म करके सारी संवेदना मिटा देता है। एक कोढ़ी के पाँव में से एक कील के आर-पार हो जाने के बाद भी उसे कोई पीड़ा नहीं होती। उसके पाँव में रोग बढ़ता जाएगा और उसे कुछ पता न

चलेगा। अंततः उसके पाँव की दशा इतनी ख़राब हो जाएगी कि उसे काटना पड़ जाएगा - और यह सब इसलिए होगा क्योंकि उसके पास "पीड़ा का अहसास" नहीं था।

विवेक पीड़ा की तरह होता है - जब हम परमेश्वर का नियम तोड़ते हैं - पाप करने का विचार करते हैं, या पाप कर चुके होते हैं - तो वह हमें चेतावनी देता है। अगर हम उसकी चेतावनी को अनदेखा करेंगे, उसके खिलाफ़ जाएंगे, तो हम धीरे-धीरे हमारे भीतर पाप की अनुभूति को ही मिटा देंगे। फिर एक ऐसा दिन आएगा जब हममें पाप के प्रति कोई अनुभूति ही नहीं रहेगी। फिर हम आत्मिक कोढ़ी बन जाएंगे; हमारा विवेक मर जाएगा। फिर हम उन पशुओं की तरह होंगे जिनका कोई विवेक नहीं होता। यही वजह है कि कुछ लोगों का व्यवहार जानवरों से भी बुरा होता है। ऐसे जीवन का अंत यही होगा कि उसे परमेश्वर द्वारा अनन्त दण्ड दिया जाएगा।

हम सभी जानते हैं कि हम पापी हैं क्योंकि हमारा विवेक हमें दोषी ठहराता है। हम दोष की उस अनुभूति को कभी अनदेखा न करें, क्योंकि वह हमारी देह में फ्पीड़ा के उपहारय् की तरह है। वह हमें बताती है कि हम आत्मिक रूप में बीमार हैं और हमें चंगा होने की ज़रूरत है। विवेक परमेश्वर द्वारा मनुष्य को दिया गया सबसे बड़ा उपहार है।

यीशु ने विवेक की तुलना आँख से की थी (लूका अध्याय 11, पद 34-36)। हमारी आँखें हमारी देह का सबसे स्वच्छ अंग होती हैं, क्योंकि वे दिन में बहुत बार आँसुओं से साफ होती रहती हैं।

हर बार जब हमारी आँख झपकती है (यह हमारे अहसास किए बिना ही दिन में सैंकड़ों बार होता है), हमारी आँखों में से धूल साफ होती रहती है। हमारी आँख में पड़ा धूल का एक मामूली कण

भी, तब तक हम अपनी आँख धोकर उस साफ नहीं कर देते, हमें बेचैन कर देने और हमारा सारा काम रोक देने के लिए काफी होता है।

हमें अपने विवेक को भी ऐसा ही रखने की ज़रूरत है - हमेशा साफ।

हमारे पाप सिर्फ परमेश्वर द्वारा क्षमा किए और धोए जा सकते हैं। हमारे विवेक में से हरेक प्रकार के अपराध के बोध को दूर करने का सिर्फ यही एक तरीक़ा है।

लेकिन पापों की क्षमा सस्ती नहीं है।

अध्याय 4

क्षमा के बारे में वास्तविक सत्य

परमेश्वर हमारे पाप कैसे क्षमा कर सकता है?

परमेश्वर एक न्यायी और धर्मी परमेश्वर है और वह एक व्यक्ति के पापों को अनदेखा करने द्वारा उन्हें क्षमा नहीं कर सकता। वह अन्याय होगा।

परमेश्वर एक पवित्र और न्यायी परमेश्वर है, इसलिए उसके लिए पाप को दण्ड देना ज़रूरी है।

सभी धर्म हमें अच्छा, दयालु और सत्यचा होना सिखाते हैं। लेकिन ये सब बातें हमें उस जीवन के बारे में बताती हैं जो हमें पापों की क्षमा प्राप्त कर लेने के बाद जीना है।

अच्छाई, दया, और सच्चाई एक इमारत के ढाँचे की तरह होती हैं। पापों की क्षमा उस इमारत की बुनियाद होती है।

परमेश्वर हमारे पाप क्षमा कर सके, इसके लिए उसे कुछ ऐसा करना पड़ा है जो उसके लिए इस सृष्टि की रचना करने से भी ज़्यादा मुश्किल और पीड़ादायक रहा है। सृष्टि की रचना के लिए परमेश्वर को सिर्फ एक शब्द बोलना पड़ा था और यह सृष्टि तुरन्त अस्तित्व में आ गई थी।

लेकिन वह हमारे पापों को एक शब्द बोलने द्वारा क्षमा नहीं कर सकता था। अगर मनुष्य के पापों को क्षमा किया जाना था, तो उसका सिर्फ एक ही तरीक़ा था। परमेश्वर को हमारी तरह मनुष्य बनने की ज़रूरत थी।

उसे उस प्रलोभनों और संघर्षों में से गुज़रने की ज़रूरत थी जिनका मनुष्यों के रूप में हमें सामना करना पड़ता है। और उसे हमारे जगह पर खड़े होकर और हमारे पापों को अपने ऊपर लेकर एक बलिदानी मृत्यु मरने की ज़रूरत थी।

पाप की सज़ा पीड़ा या रोग या ग़रीबी या संसार में एक नीचे स्तर पर दोबारा जन्म लेना या कोई ऐसी दूसरी बात नहीं है। वह अनन्त मृत्यु है - जो हमेशा के लिए परमेश्वर से दूर हो जाने के समान है।

शारीरिक मृत्यु शरीर से अलग हो जाना है। वैसे ही आत्मिक मृत्यु परमेश्वर से, जीवन के मूल स्रोत् से अलग हो जाना है।

आप जो अच्छे काम भविष्य में करते हैं, वे उन पापों का प्रायश्चित् नहीं हो सकते जो आपने भूतकाल में किए हैं। पाप वह कज़र् है जो हमें परमेश्वर की व्यवस्था को चुकाना होता है। अगर हम देश के नियमों को तोड़ते हैं - जैसे, हमारा आयकर चुकाने के मामले में, हमारा पिछला आयकर सिर्फ इस वजह से क्षमा नहीं कर दिया जाएगा क्योंकि हम भविष्य का आयकर चुकाने का वादा करते हैं। नहीं। अगर हम भविष्य का आयकर चुकाएंगे, तब भी हमें पिछला आयकर तो चुकाना ही पड़ेगा। पाप के साथ भी ऐसा ही है।

हम भविष्य में चाहे जितने भी भले काम करें, हमें फिर भी भूतकाल में किए पापों का भुगतान तो करना ही पड़ेगा।

इसके अलावा, बाइबल कहती है कि "हमारे सर्वश्रेष्ठ काम भी परमेश्वर की दृष्टि में मैले चिथड़ों के समान हैं" (यशायाह अध्याय 64, पद 6)।

परमेश्वर भले कामों की प्रशंसा करता है। लेकिन हमारे सर्वश्रेष्ठ काम भी उसकी पवित्रता के स्तर के अनुसार नहीं होते, क्योंकि वह एक असीम रूप में पवित्र है। इसलिए हमारे पास कोई आशा

नहीं है, क्योंकि हमारे भले काम भी पर्याप्त रूप में भले नहीं हैं। ऐसा कोई तरीक़ा नहीं है जिसके द्वारा हम परमेश्वर की उपस्थिति में पहुँच सकते हों।

हम पूरी तरह आशा-रहित रूप में खोए हुए हैं।

लेकिन परमेश्वर ने फिर भी अपने महान् प्रेम में एक ऐसा रास्ता तैयार किया है जिसके द्वारा हमारे पाप क्षमा हो सकते हैं।

परमेश्वर ऐसा गूढ़ है कि हमारे मानवीय मन पूरी तरह से उसे कभी नहीं समझ सकते। बाइबल परमेश्वर को एक परमेश्वर के रूप में प्रस्तुत करती है, फिर भी उस एकत्व में वे तीन व्यक्ति हैं - जिन्हें हम पिता, पुत्र (अर्थात् उसका वही स्वभाव है जो पिता का है, यह नहीं कि वह पिता के द्वारा पैदा हुआ है) और पवित्र-आत्मा के रूप में जानते हैं - वे एक-दूसरे के बराबर हैं।

हमारे मानवीय मन के लिए यह समझना असम्भव है कि तीन अलग व्यक्ति एक परमेश्वर कैसे हो सकता है। हमारी सोच में हम व्यक्तियों को अलग देह वाले व्यक्ति ही जान सकते हैं। लेकिन परमेश्वर आत्मा है। वे परमेश्वर के गूढ़ स्वभाव को नहीं जान सकते।

जैसे एक कुत्ता उन बातों को नहीं समझ सकता जिन्हें मनुष्य समझ सकते हैं, वैसे ही परमेश्वर के विषय की ऐसी बातें हैं जिन्हें हम मनुष्य नहीं समझ सकते। हम सिर्फ वही जान सकते हैं जो परमेश्वर ने बाइबल में हम पर प्रकट की हैं। इससे ज़्यादा हम कुछ नहीं जान सकते।

जैसे, आप एक चतुर कुत्ते को उसके आगे 3 हड्डियाँ रखने द्वारा, और उन्हें एक-एक कर गिनने द्वारा जमा करना सिखा सकते हैं - कि 1+1+1 = 3 होता है।

लेकिन उस कुत्ते को गुणा करना सिखाने की कोशिश करके देखें - कि 1 x 1 x 1 = 1 होता है।

आप यह पाएंगे कि सबसे चतुर कुत्ता भी यह नहीं समझ पाएगा!

फिर भी हम मनुष्य यह भली-भांति जानते हैं कि तीन “1” जब “1” के साथ गुणा किए जाते हैं, तो वे फिर भी “1” ही रहते हैं!

अब, हम जितना कुत्तों से ऊँचे हैं, परमेश्वर हमसे उससे बहुत ज़्यादा ऊँचा है।

एक कुत्ते को गुणा के सवाल समझने के लिए एक मनुष्य बनना पड़ेगा।

हमें परमेश्वर को समझने के लिए परमेश्वर बनना पड़ेगा।

इसलिए इसमें कोई हैरानी की बात नहीं है कि परमेश्वर तीन व्यक्ति होते हुए भी एक परमेश्वर है। हालांकि यह हमारी समझ में नहीं आता, हम जानते हैं कि यह सत्य है क्योंकि परमेश्वर अपने वचन में ऐसा कहता है।

इसी तरह, अनेक लोग मानवीय तर्क इस्तेमाल करते हैं और यह कहते हैं कि परमेवर सब जगह है, तो परमेश्वर को हरेक मनुष्य, पशु व पेड़-पोधै में और हरेक धार्मिक स्थान में होना चाहिए। यह बात एक ऐसे छोटी मानवीय सोच में बहुत तर्कपूर्ण लग सकती है जिसने ईश्वरीय सत्यों को नहीं समझा है।

लेकिन यह बात पूरी तरह से ग़लत है। परमेश्वर सिर्फ भावार्थ से सब जगह है कि वह सब जगह होने वाली सब बातों को जानता है। लेकिन यक़ीनन वह नर्क में नहीं है हालांकि वह जानता है कि नर्क में क्या हो रहा है।

नर्क का अर्थ (पापियों के अनन्त दण्ड का स्थान) है “वह जगह जहाँ परमेश्वर नहीं है।" नर्क में पापियों की पीड़ा को यही बात असहनीय बना देती है।

यक़ीनन परमेश्वर सभी में नहीं रहता।

मानवजाति को उसके पापों के अनन्त दण्ड से बचाने के लिए, परमेश्वर पिता ने 2000 साल पहले पुत्र को भेजा कि वह पवित्र-आत्मा के अलौकिक काम द्वारा एक कुँवारी से एक बालक के रूप में जन्म ले।

उसका नाम यीशु मसीह रखा गया।

एक बच्चे में से वह एक पुरुष बना, और उसने ऐसी हरेक परीक्षा का सामना किया जिनका सामना मनुष्यों को करना पड़ता है। उन सभी परीक्षाओं में वह जयवंत हुआ। उसने कभी कोई पाप नहीं किया।

परमेश्वर पिता ने यीशु मसीह को, जो पुत्र है, 33 साल की उम्र में दुष्ट मनुष्यों द्वारा पकड़े जाने और सूली पर चढ़ाने दिया। सूली पर वह हमारे लिए श्राप बन गया और उसने मानव जाति के पाप की सज़ा को अपने ऊपर ले लिया। वहाँ हम परमेश्वर के ज़बरदस्त प्रेम को देखते हैं।

जब यीशु सूली पर मरा, और उसने अपना ख़ून बहाया, तब हमारे पापों की सज़ा पूरी हो गई और उनका पूरा दाम चुका दिया गया। न्याय की माँग पूरी हो गई है।

परमेश्वर ने यीशु मसीह को कब्र में रखने के तीन दिन बाद मृतकों में से जीवित किया कि यह प्रमाणित किया जा सके कि सूली पर उसके बलिदान को स्वीकार कर लिया गया है।

एक ही परमेश्वर है और इस पृथ्वी पर परमेश्वर का सिर्फ़ एक ही देहधारी रूप है - प्रभु यीशु मसीह, यह इन दो सत्यचाइयों से साबित हो जाता हैः

1. प्रभु यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा है जो जगत के पापों के लिए मरा है।
2. प्रभु यीशु मसीह ही एकमात्र ऐसा है जो मरने के बाद इस तरह जी उठा है कि अब वह कभी नहीं मरेगा - इस तरह, उसने मनुष्य के सबसे बड़े शत्रु - मृत्यु पर जय पा ली है।

पृथ्वी पर 40 दिन बिताने के बाद, यीशु स्वर्ग में लौट गया जहाँ वह आज है।

उसने जाने से पहले, यह वादा किया था कि वह एक दिन वापिस लौटकर जगत का न्याय करेगा और धार्मिकता और न्याय से राज्य करेगा। और उसने हमें कुछ ऐसे चिन्ह् भी दिए जो उसके पृथ्वी पर लौटने से पहले प्रकट होंगे।

और अब जबकि हम उन चिन्हों को पूरा होता हुआ देख रहे हैं, तो हम जानते हैं कि मसीह का दूसरा आगमन बहुत निकट है।

इससे पहले कि वह पृथ्वी पर लौटे, यह ज़रूरी है कि आप उस क्षमा को ग्रहण कर लें जो परमेश्वर मसीह में देता है।

अध्याय 5

मन-फिराव के बारे में वास्तविक सत्य

पाप की सज़ा आत्मिक मृत्यु है - जिसका अर्थ हम पहले ही देख चुके हैं, यह है कि हम परमेश्वर की उपस्थिति से हमेशा के लिए दूर हो जाते हैं। यीशु ने सूली पर यही अनुभव किया था। वह परमेश्वर द्वारा त्याग दिया गया था।

यीशु ने जो परमेश्वर है, और इसलिए उसके भीतरी मनुष्य में अनन्त है, कुछ समय के लिए अपने पिता से अलग होने की पीड़ा का अनुभव किया था - सूली पर लटकते हुए उसने 3 घण्टे का उस समय पूर्ण अंधकार सहन किया था जब उसने अनन्त नर्क की पीड़ा को सहा था, वह पीड़ा जो अनन्त तक हमें सहनी थी।

हमारे पाप का दण्ड उसने सह लिया है। लेकिन जब तक हम उस क्षमा को परमेश्वर से नहीं पाते, तब तक हमारे पाप क्षमा नहीं होते और हम उनके दण्ड से मुक्त नहीं होते। यही वजह है कि आज संसार में ज़्यादातर लोग एक क्षमा-रहित दशा में हैं हालांकि मसीह उनके लिए मर चुका है।

मसीह सिर्फ मसीही लोगों के लिए नहीं, सारे संसार के पापों के लिए मरा है, हरेक धर्म के लोगों के लिए मरा है।

मसीह की मृत्यु द्वारा परमेश्वर ने आपके लिए जो ख़रीदा है, उसे पाने के लिए आपको पहले अपने पापों से मन फिराने की ज़रूरत है। इसका अर्थ है कि आपको वास्तव में अपने पापमय जीवन पर पछतावा हो रहा है, और अब आपके अन्दर सभी ज्ञात पापों से मन फिराने की एक सच्ची अभिलाषा है।

आरम्भ में आपका विवेक उस बातों के प्रति संवेदनशील नहीं होता जो बातें परमेश्वर को प्रसन्न करती हैं और जो उसे प्रसन्न नहीं करती हैं। इसलिए आपके लिए यह असम्भव होता है कि आप अपने जीवन में स्वयं को ऐसी हरेक बात से दूर कर सकें जो परमेश्वर को अप्रसन्न करती हैं। और परमेश्वर ऐसी माँग भी नहीं करता क्योंकि वह व्यावहारिक है। वह सिर्फ उन्हीं बातों को त्यागने के लिए कहता है जो उसे अप्रसन्न करती हैं।

इसका आरम्भ आप उन बातों को त्यागने द्वारा कर सकते हैं जिनके लिए आपका विवेक आपको दोषी ठहराता है।

यह हो सकता है कि आपके अन्दर अपनी बुरी आदतों को छोड़ने की ताक़त न हो। इसमें भी परमेश्वर आपकी कमज़ोरी को पूरी तरह समझता है। उसकी अपेक्षा यह नहीं होती कि आपके अन्दर वह ताक़त हो। वह आपसे सिर्फ इतना पूछता है, "क्या तू उन आदतों को छोड़ने के लिए तैयार है?" जब वह यह देखता है कि आप ईमानदार हैं और आप वास्तव में वह सब कुछ त्याग देना चाहते हैं जो पापमय है, तो आपको वैसे ही स्वीकार कर लेगा जैसे आप हैं, फिर चाहे आप बहुत सी बुरी आदतों से हारे हुए भी क्यों न हों।

यह कितना सुन्दर सुसमाचार है!

आप अपने पुराने पापमय तौर-तरीक़े छोड़ देने के लिए तैयार हैं, इसका एक सबूत यह होगा कि आपने बीते समय में जिसके साथ जो कुछ भी ग़लत किया है, आप उसकी भरपाई करने के लिए तैयार हो जाएंगे। और यहाँ भी परमेश्वर आपकी सीमाओं को जानता है।

आपने बीते समय में ऐसी हज़ारों ग़लतियाँ और पाप किए होंगे जिनकी आप भरपूर कोशिश करने पर भी कभी पूरी भरपाई नहीं

कर पाएंगे। लेकिन कुछ ऐसे होंगे जिनकी आप भरपाई कर सकेंगे। परमेश्वर यह अपेक्षा करता है कि आप सब बातों की भरपाई करने में अपनी योग्यतानुसार ही अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करें।

उदाहरण के तौर पर, अगर आपने किसी का धन चुराया है, और जैसे ही आप उतने धन की बचत कर लें, तो आपको वह धन उसे तुरन्त लौटाने के लिए तैयार रहना चाहिए। अगर आपने अपने शब्दों से किसी को चोट पहुँचाई है और आपको वह बात याद है, तो आपको उसके पास जाकर (या लिखकर) अपने कहे हुए शब्दों के लिए उससे क्षमायाचना करने के लिए तैयार रहना चाहिए। ऐसे कामों द्वारा परमेश्वर आपकी ईमानदारी और आपकी दीनता को परखेगा। वह सिर्फ नम्र व दीन लोगों की ही मदद करता है। और परमेश्वर की मदद के बिना हम मुक्त नहीं हो सकते।

बाइबल सच्चे मन फिराव के बारे में कहती है कि वह "मूर्तियों की तरफ से परमेश्वर की तरफ फिरना" होता है (1 थिस्स. अध्याय 1, पद 9)।

मूर्तिपूजा क्या है?

मुख्य रूप में, मूर्तिपूजा किसी सृजी हुई वस्तु को सृजनहार से बढ़कर मानना होता है - फिर वह सृजी हुई वस्तु चाहे धन हो, या कोई सुन्दर स्त्री हो, हमारा अच्छा नाम हो, या कुछ भी हो।

ऐसी किसी भी सृजी हुई वस्तु का चुनाव करना मूर्तिपूजा है - क्योंकि यह सृष्टिकर्ता को छोड़ किसी सृष्टि की आराधना करना है - और यही सारे पाप का मूल है। परमेश्वर ऐसी मूर्तिपूजा से घृणा करता है, क्योंकि यह मनुष्य के हृदय में वह स्थान ले लेती है जो परमेश्वर का होना चाहिए, और इस तरह यह मनुष्य को नाश कर देती है।

मूर्तियाँ मनुष्यों द्वारा रची गईं ऐसी भौतिक वस्तुएं भी हो सकती हैं जो वे उनके आराध्य देवों के प्रतीक के रूप में बनाते हैं। लेकिन किसी मनुष्य के लिए उसके हाथों से ऐसा कुछ रचना या उसका चित्र बनाना असम्भव है जो सारी सृष्टि के रचने वाले सुन्दर, अद्भुत और सर्वशक्तिशाली परमेश्वर की एक मामूली सी झलक भी दिखा सकता हो।

यह सृष्टिकर्ता परमेश्वर का अपमान करना है कि हम उसकी छवि को किसी ऐसी वस्तु की समानता में बनाएं जो उसने सृजी है।

परमेश्वर एक आत्मा है और हमारी शारीरिक आँख उसे नहीं देख सकती। उसने हमें एक विवेक दिया है जो हमें रात-दिन उसकी याद दिलाता रहता है। लेकिन अक्सर धार्मिक गतिविधियाँ और तीर्थ-यात्राएं विवेक की आवाज़ को सुनने की जगह ले लेते हैं और उसका विकल्प बन जाते हैं।

जब लोग परमेश्वर के नियम तोड़ते हैं, और उन्हें भविष्य में भी तोड़ते रहने की योजना बनाते हैं, तो वे विभिन्न धार्मिक विधियों और गतिविधियों में से गुज़रने द्वारा अपने विवेक की आवाज़ को दबाते हैं। वे यह कल्पना करते हैं कि परमेश्वर उनके बलिदानों और तीर्थ-यात्राओं की वजह से उनके पापों को क्षमा कर देगा। लेकिन यह एक धोखा है।

परमेश्वर हमारी धार्मिक विधियों और गतिविधियों को नहीं देखता। वह हमारे हृदय को देखता है, और यह देखता है कि हम अपने विवेक की आवाज़ को सुनते हैं या नहीं।

इस तरह, मन-फिराव हर तरह की मूर्तिपूजा से फिर जाना है। सत्यचे मन फिराव में, हम हरेक सृजी हुई वस्तु की तरफ से सृष्टिकर्ता की तरफ फिर जाते हैं और उससे कहते हैं, "सर्वशक्तिमान परमेश्वर, सिर्फ तू ही आराधना और सेवा के योग्य

है। मैने अब तक जो सृजी हुई वस्तुओं की आराधना की है, उसके लिए मैं क्षमा माँगता हूँ। अब से मेरे जीवन में सिर्फ तू ही सबसे बढ़कर होगा।"

मन-फिराव का अर्थ यह नहीं है कि हमें अपने काम-धंधे और घर-परिवार छोड़ देने पड़ेंगे और तपस्वियों की तरह किसी जंगल में या पहाड़ पर चले जाना होगा। नहीं।

परमेश्वर चाहता है कि हम सबके परिवार हों और हम अपनी जीविका चलाने के लिए काम करें और धन अर्जित करें।

पैसा कमाना पाप नहीं है। लेकिन यह ज़रूर पाप है कि हम परमेश्वर से ज़्यादा धन से प्रेम करें।

आधुनिक जीवन-शैली द्वारा उपलब्ध की जाने वाली सुख-सुविधाओं का उपयोग करना कोई पाप नहीं है। लेकिन परमेश्वर से बढ़कर उन सुख-सुविधाओं से प्रेम करना ज़रूर पाप है।

परमेश्वर ने हमारी देह की रचना इस तरह की है कि वह खाने, सोने, और यौन-सुख का अनुभव कर सकती है।

इनमें से किसी में कोई बुराई नहीं है। हमें अपनी यौन-सम्बंधी इच्छा पर वैसे ही शर्मिन्दा होने की ज़रूरत नहीं है जैसे हम अक्सर भूखे होने और थक जाने पर शर्मिन्दा नहीं होते! लेकिन जब हम भूखे होते हैं तो हमें खाना चुरा कर नहीं खाना चाहिए, और हमें अपनी नौकरी के समय सोना नहीं चाहिए!

इसी तरह, हमें अपनी यौन-सम्बंधी इच्छा को पूरा करने के लिए दूसरे व्यक्ति को लज्जित नहीं करना चाहिए। परमेश्वर ने विवाह को मंज़ूरी दी है - उसकी यह अपेक्षा है कि एक पुरुष की एक पत्नी हो कि यौन-सम्बंधी इच्छा को पूरा किया जा सके। विवाह के सम्बंध से बाहर, कोई भी लैंगिक सम्बंध पाप है। हमें हरेक

लैंगिक पाप से मन फिरा लेना चाहिए, उसे त्याग देना चाहिए, और पूरी ईमानदारी के साथ परमेश्वर की ओर फिर जाना चाहिए।

एक और पाप जिससे आपको मन फिरा कर त्याग देना चाहिए, वह दूसरों को क्षमा न करने का मनोभाव है। अगर आप चाहते हैं कि परमेश्वर आपके पाप क्षमा करे, तो आपको उन सभी लोगों को क्षमा करने के लिए तैयार रहना होगा जिन्होंने आपको किसी भी तरह का नुक़सान पहुँचाया है।

परमेश्वर ने जो आपके साथ किया है, वही आपको दूसरों के साथ करना चाहिए। अगर आप यह करने के लिए तैयार नहीं हैं, तो परमेश्वर आपको क्षमा नहीं करेगा। प्रभु यीशु मसीह ने कहा,

"अगर तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हें क्षमा करेगा" (मत्ती अध्याय 6, पद 15)।

यह हो सकता है कि आपको किसी व्यक्ति को क्षमा करना बहुत मुश्किल हो जिसने आपको बहुत नुक़सान पहुँचाया है। तब आप परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि वह उस व्यक्ति को क्षमा करने में आपकी मदद करे। परमेश्वर की सर्व-सामर्थ्य इसमें आपकी मदद करने के लिए उपलब्ध रहती है। अगर परमेश्वर की सर्वशक्तिशाली सामर्थ्य आपकी मदद के लिए उपलब्ध है, तो आपके लिए कुछ भी करना असम्भव न होगा!

हमारे पाप चाहे कितने भी बड़े और दुष्टता से भरे हुए क्यों न हों, परमेश्वर हमारे सब पाप क्षमा कर सकता है, लेकिन यह सिर्फ तभी होता है जब हम उनसे मन फिरा लेते हैं, अर्थात्, जब हमें अपने पापों पर वास्तव में पछतावा होता है, और हम पूरी ईमानदारी के साथ अपने पापमय तौर-तरीक़ों को छोड़ देना चाहते हैं।

अध्याय 6

विश्वास के बारे में वास्तविक सत्य

जब हम एक बार मन-फिरा लेते हैं, तो परमेश्वर की क्षमा ग्रहण करने के लिए हमें विश्वास की ज़रूरत होती है।

"कृपा से विश्वास के द्वारा तुम्हारा उद्धार हुआ है" (इफिसियों अध्याय 2, पद 8)।

कृपा परमेश्वर का हमारी तरफ बढ़ाया हुआ वह हाथ है जो हमारी मदद करता और हमें आशिष देता है।

जैसा कि हमने पहले भी देखा है, परमेश्वर को ऐसे यान्त्रिक मनुष्य नहीं चाहिए जो सिर्फ इसलिए काम करते हैं क्योंकि उसने उन्हें पहले से ही उन कामों के लिए स्वचालित कर रखा है। नहीं। परमेश्वर चाहता है कि हम अपनी इच्छा में एक चुनाव करें।

क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर एक भला परमेश्वर है जो आपसे बहुत प्रेम करता है?

क्या आप यह विश्वास करते हैं कि परमेश्वर ने उसके पुत्र प्रभु यीशु मसीह को भेजा कि वह सूली पर आपके पापों के लिए मरे, और यह कि परमेश्वर ने उसे तीन दिन के बाद मृतकों में से जीवित किया, और यह कि आज वह स्वर्ग में रहता है?

अगर हाँ, तो आप अभी परमेश्वर द्वारा दी जाने वाली क्षमा पा सकते हैं। इसके लिए आपको इंतज़ार करने की ज़रूरत नहीं है।

प्रभु यीशु मसीह के नाम के अलावा पृथ्वी पर दूसरा कोई नाम नहीं है जिसमें पापों से मुक्ति पाई जा सकती है। अगर आप उसे

अपने प्रभु और मुक्तिदाता के रूप में ग्रहण करना चाहते हैं, तो जैसे विवाह में ज़रूरी होता है, वैसे ही "हमें सब कुछ छोड़ कर उसे लिपटे रहना है।" विवाह में, एक स्त्री को अपने सभी पुराने प्रेमियों को त्याग कर उसके जीवन-भर सिर्फ एक व्यक्ति को उसके पति के रूप में लिपटे रहना होता है।

बाइबल प्रभु यीशु मसीह के साथ हमारे रिश्ते को एक आत्मिक विवाह का रिश्ता मानती है जिसमें सिर्फ वही हमारा ईश्वरीय पति है। इसलिए, अगर आप अभी भी दूसरे आराध्य देवों की आराधना और उनसे प्रार्थना करते हैं, तो आप यह नहीं कह सकते कि आप मसीह को ग्रहण करने के लिए तैयार हैं। आपको एक चुनाव करना पड़ेगा।

अगर आपको वह चुनाव करना है, तो उसका समय अभी है।

अभी अपने घुटनों पर होकर अपनी आँखें बंद करें और परमेश्वर से ये शब्द बोलें। आप जहाँ भी हैं, वह आपकी सुन सकता है। और उसे आपकी बात सुनने में दिलचस्पी है। इन शब्दों को अर्थ के साथ धीरे-धीरे बोलेंः

"प्रभु यीशु मसीह, मैं एक पापी हूँ और मैं वास्तव में अपने पापों से मन फिराना चाहता हूँ। मैं यह विश्वास करता हूँ कि तू मेरे पापों के लिए मरा है, और यह कि तू मृतकों में से जी उठा है, और यह कि तू आज जीवित है। कृपा करके मेरे पापों को क्षमा कर दे। मेरे हृदय और मेरे जीवन में आ और आज से मेरे जीवन का प्रभु हो जा। मैं अपने सारे आराध्य देवों को त्यागना और अब से सिर्फ तेरी आराधना करना चाहता हूँ।"

यह एक बहुत आसान प्रार्थना है जिसमें आपको एक मिनट से ज़्यादा समय नहीं लगेगा। लेकिन अगर आप पूरी ईमानदारी से

प्रार्थना करेंगे, तो आपकी आत्मा अनन्त के लिए उद्धार पा लेगी। आप तुरन्त परमेश्वर की संतान बन जाएंगे।

यह कोई ऐसा जादूई मंत्र नहीं है कि जो हरेक ऐसे व्यक्ति को आशिष देगा जो इसे एक तोते की तरह रटते हुए दोहराएगा। आप जो मुख से अंगीकार करते हैं, अगर उस पर हृदय से विश्वास भी करेंगे, तो परमेश्वर आपके पापों को क्षमा करेगा, और आपको उसकी संतान के रूप में ग्रहण करेगा। अगर आप ईमानदार नहीं होंगे, तो आपमें कोई बदलाव नहीं होगा।

परमेश्वर किसी मनुष्य को मजबूर नहीं करेगा कि वह मसीह को उसके जीवन में ग्रहण करे। और न ही कोई सत्यचा मसीह किसी को मजबूर करेगा कि वह मसीह को ग्रहण करे। जिन्हें मन-फिराव के लिए मजबूर किया गया है, उनका मन-फिराव हुआ ही नहीं है।

हमारे लिए इस बात में आश्वस्त होना बहुत ज़रूरी है कि हमें वास्तव में पापों की क्षमा मिल गई है, हम परमेश्वर द्वारा स्वीकार कर लिए गए हैं, और उसने हमें अपनी संतान बना लिया है। परमेश्वर यह नहीं चाहता कि हम ऐसा आश्वासन पाने से वंचित रह जाएं। परमेश्वर हमारे हृदयों में आने वाले उसके पवित्र-आत्मा द्वारा हमें यह आश्वासन देता है और हमें बताता है कि हम उसकी संतान हैं। परमेश्वर यह आश्वासन हमें उसके लिखित वचन (बाइबल) में उसकी प्रतिज्ञाओं द्वारा भी देता है।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा,

“जो कोई मेरे पास आएगा, मैं निश्चय ही उसे न निकालूँगा” (यूहन्ना अध्याय 6, पद 37)।

हम पूरे अनन्त के लिए मसीह की इस प्रतिज्ञा पर भरोसा कर सकते हैं। क्या आपने अभी प्रभु यीशु मसीह से पूरी ईमानदारी से वह प्रार्थना की है? तब आप निश्चय ही उसके पास आ गए हैं।

तब आप यह यक़ीन कर सकते हैं कि उसने आपको अस्वीकार नहीं किया है। उसने आपको स्वीकार कर लिया है। अगर आपने उसके पास आने का अपना काम कर दिया है, तो आप यक़ीन कर सकते हैं कि परमेश्वर ने आपको स्वीकार करने का उसका काम कर दिया है।

अब आपको अपनी अनुभूतियों पर निर्भर रहने की ज़रूरत नहीं है; अब यह ज़रूरी नहीं है कि आपको यह महसूस हो कि परमेश्वर ने आपको स्वीकार किया है या नहीं। अनुभूतियों का सम्बंध हमारी भौतिक देह से होता है, और आत्मिक मामलों में वे हमेशा धोखा देने वाली साबित होती हैं।

हमारे भरोसे को हमारी अनुभूतियों पर आधारित करना ऐसा ही है जैसे अपने घर की बुनियाद को रेत पर बनाना। हमें अपना विश्वास परमेश्वर के वचन में दी गई उसकी प्रतिज्ञाओं पर आधारित करना चाहिए - और यह चट्टान पर बनाने समान होता है।

जब आपको इस बात का यक़ीन हो जाए कि आप परमेश्वर की संतान हैं, तब आपको सबके सामने इसका अंगीकार करना चाहिए। बाइबल कहती है कि जिस बात पर आप हृदय में विश्वास करें, उसका अपने मुख से अंगीकार करें। इसलिए अब आपको अपने मुख से यह अंगीकार करना चाहिए कि यीशु मसीह आपका मुक्तिदाता और प्रभु है। आपको अपने मित्रों और परिवार के लोगों को बताना चाहिए कि मसीह ने आपके पापों को क्षमा कर दिया है और अब सिर्फ वही आपके जीवन का प्रभु है।

फिर मसीह के साथ आपको अपने इस रिश्ते का बपतिस्मे द्वारा अंगीकार करना चाहिए। जब आप मसीह को अपना हृदय दे दें, उसके बाद जितना जल्दी हो सके आप बपतिस्मा ले लें। बपतिस्मा कोई धार्मिक विधि नहीं है। यह परमेश्वर, मनुष्यों, स्वर्गदूतों और

शैतान के सामने आपकी सार्वजनिक साक्षी है कि अब आप सिर्फ यीशु मसीह के हैं।

बपतिस्मे में, एक दूसरा मसीही आपको पिता, पुत्र और पवित्र-आत्मा के नाम में पूरी तरह से पानी में डुबाता है (या तो एक नदी में, या एक टैंक में), और फिर आपको पानी में से बाहर निकाल लेता है। इस सामान्य क्रिया द्वारा, आप इस सत्य सचाई की साक्षी दे रहे हैं कि आपका पिछला/पुराना मनुष्यत्व मर गया है। आप पानी में पूरे डूब जाने द्वारा एक प्रतीकात्मक रूप में उसे दफना देते हैं।

पानी से बाहर आते हुए, आप यह अंगीकार करते हैं कि अब आप एक नए व्यक्ति हैं (आत्मिक रीति से कहें, तो जो मृतकों में से जी उठा है), जो सिर्फ परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हैं।

आप अभी तक सिद्ध नहीं हो गए हैं। सिद्ध होने के लिए आपका पूरा जीवन लग जाएगा। लेकिन आपने अपने जीवन की दिशा बदल ली है। अब आप पाप नहीं करना चाहते या परमेश्वर को अप्रसन्न नहीं करना चाहते।

अब आप स्वर्ग के एक नागरिक, और परमेश्वर की संतान हो गए हैं।

अध्याय 7

उद्धार के बारे में वास्तविक सत्य

"यीशु" नाम का अर्थ "उद्धारकर्ता" है।

वह इस नाम के साथ ही पृथ्वी पर आया था, क्योंकि वह यही करने के लिए आया था - लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए। उद्धार क्षमा पाने से कहीं बढ़कर है।

इनके अन्तर को स्पष्ट करने के लिए मैं एक उदाहरण देना चाहता हूँ।

मान लें कि मेरे घर के बाहर की सड़क पर मरम्मत का काम चल रहा है, और वहाँ एक गहरा गड्ढा खोदा गया है। मैं अपने छोटे बेटे को यह कहते हुए चेतावनी देता हूँ, "उस गड्ढे के पास न जाना, क्योंकि तुम उसमें गिर सकते हो।" लेकिन मान लें कि वह मेरी बात नहीं मानता और उस गड्ढे में अन्दर झाँकने के लिए उसके पास जाता है। और वह फिसल कर उसके अन्दर गिर जाता है। और फिर 10 फुट गहरे उस गड्ढे में से वह मुझे पुकारता है। जब मैं वहाँ आता हूँ तो वह मुझसे कहता है कि मेरी आज्ञा का पालन न करने का उसे वास्तव में पछतावा हो रहा है, और वह मुझसे उसे क्षमा करने के लिए कहता है। मान लें कि फिर मैं उससे कहता हूँ, "ठीक है बेटा, मैंने तुम्हें क्षमा कर दिया है। अलविदा!", तो मैंने क्या किया है? मैंने उसे क्षमा तो कर दिया है, लेकिन उसे बचाया नहीं है।

उद्धार क्षमा करने से ज़्यादा है। उसे बचाने के लिए मुझे उस गड्ढे में से उसे बाहर निकालना होगा जिसमें वह गिर गया है।

यीशु हमारे लिए यही करने आया था। सिर्फ इतना काफी नहीं है कि वह हमारे पाप क्षमा करता है। यह ज़रूरी है कि वह हमें पाप से बचा भी ले।

हम सब अपने विवेक की आवाज़ को बार-बार अनसुना करने द्वारा पाप के गहरे गड्ढे में गिरे हुए हैं। अब अगर परमेश्वर हमें क्षमा कर देता है, तो यही अपने आप में बड़ी ख़ुशख़बरी होगी। लेकिन मसीह की वास्तविक ख़ुशख़बरी यह है कि वह न सिर्फ हमारे पाप क्षमा करता है, बल्कि वह हमें पाप की शक्ति से बचाता भी है।

हमें उद्धार को तीनों कालों में समझना पड़ेगा - भूतकाल, वर्तमानकाल, और भविष्यकाल। सबसे पहले तो हमें पाप के दण्ड से बचने की ज़रूरत थी। फिर हमें पाप की शक्ति से बचने की ज़रूरत है। और अंत में, जब हम स्वर्ग जाएंगे, तब हम पाप की उपस्थिति से बच जाएंगे।

हमारे उद्धार का पहला भाग हमारे पापों की क्षमा से व्यवहार करता है - हमारे भूतकाल के पापों का निपटारा करता है।

लेकिन वह काफी नहीं है। हमें भविष्य में खराई से रहने के लिए परमेश्वर से मदद पाने की ज़रूरत है। और इसके लिए परमेश्वर हमें उसकी सामर्थ्य देता है।

मैंने एक पागलों के अस्पताल के बारे में सुना जहाँ मानसिक रूप से अस्थिर लोगों को इलाज के लिए दाख़िल किया जाता था। यह जानने के लिए, कि उनके मरीज़ इस हद तक ठीक हो चुके हैं या नहीं कि वे सही तरह तर्क कर सकें, अस्पताल में एक परीक्षण किया जाता था। वे हरेक मरीज़ को एक ऐसे कमरे में छोड़ते थे जिसके नल में से लगातार पानी बहता रहता था। फिर वे उसे एक

बाल्टी और पोंछा देते थे कि वह ज़मीन पर फैले पानी को सुखाए। अगर नल को बंद किए बिना ही वह पहले पानी सुखाने की कोशिश करने लगता था, तो इससे पता चल जाता था कि उसकी तर्क की शक्ति काम नहीं कर रही है!

हमारी भी यही समस्या है। हमारे भीतर भी एक नल है जिसमें से लगातार पाप प्रवाहित हो रहा है। यीशु न सिर्फ हमारे उन पापों को पोंछ/धो देता है जो हम पहले कर चुके हैं, बल्कि वह हमें उसे बंद करने की शक्ति भी देता है। वर्ना सुसमाचार कभी एक ख़ुशख़बरी न होता।

बाइबल में सुसमाचार (ख़ुशख़बरी) का बयान इस तरह किया गया है कि वह "उद्धार के लिए परमेश्वर की सामर्थ्य है" (रोमियों अध्याय 1, पद 16)।

सामर्थ्य का सबसे पहला स्रोत् परमेश्वर का वचन है। पवित्र-शास्त्र एक ऐसा शक्तिशाली हथियार है जो हमें प्रलोभन पर जयवंत करता है। हम बाइबल में यह पढ़ते हैं कि स्वयं यीशु ने परमेश्वर के वचन की सामर्थ्य द्वारा शैतान के प्रलोभनों पर जय पाई थी (मत्ती अध्याय 4, पद 1-11)।

इस वजह से ही हमें प्रतिदिन परमेश्वर का वचन पढ़ने की आदत विकसित करनी चाहिए, कि परमेश्वर उसमें से हमसे बात कर सके और हमारे प्रतिदिन के जीवन के संघर्षों का सामना करने के लिए हमें सामर्थ्य प्रदान कर सके।

बाइबल युवाओं से कहती है, "तुम बलवान हो, क्योंकि परमेश्वर का वचन तुममें बना रहता है और तुमने उस दुष्ट पर विजय पा ली है" (1 यूहन्ना, अध्याय 2, पद 14)।

सामर्थ्य का दूसरा स्रोत् परमेश्वर का पवित्र-आत्मा है जो हममें रहने के लिए आता है। वह हममें हमेशा के लिए रहना चाहता है,

हमसे प्रतिदिन बात करना चाहता है, जीवन के संघर्षों में हमें सामर्थ्य देना चाहता है, और यीशु के शिष्यों के रूप में हमें उसके पदचिन्हों पर चलने में मदद करना चाहता है। हमें परमेश्वर से लगातार यह कहते रहना चाहिए कि वह हमें पवित्र-आत्मा से भरता रहे।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा था, "जब तुम बुरे मनुष्य होते हुए भी अपने बच्चों को अच्छी वस्तुएं देना जानते हो, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता तुम्हारे माँगने पर तुम्हें पवित्र-आत्मा क्यों न देगा" (लूका अध्याय 11, पद 13)।

सामर्थ्य का तीसरा स्रोत् समान-विचारों वाले मसीहियों के साथ संगति करना है।

जब आग में बहुत से कोयले एक-साथ होते हैं, तो वे एक ज्योतिर्मय रूप में जलते हैं। लेकिन अगर उनमें से एक कोयले को निकाल लिया जाए (चाहे वह सबसे ज़्यादा ज्योतिर्मय कोयला ही क्यों न हो), वह जल्दी ही बुझ जाएगा। अगर हम भी दूसरे मसीहियों के साथ सहभागिता किए बिना अपने आप में ही परमेश्वर के लिए जीने की कोशिश करेंगे, तो हमारे साथ भी ऐसा ही होगा।

लेकिन हमें यहाँ बहुत सत्येत रहने की ज़रूरत है, क्योंकि वे सभी जो अपने आपको "मसीही" कहते हैं, वे सभी सत्यचे मसीही नहीं हैं। असल में, यह कहना ग़लत न होगा कि अपने आपको मसीही कहने वाले 90 परमेश्वर की संतान ही नहीं हैं (चाहे वे किसी भी मसीही-मत या समूह का हिस्सा क्यों न हों)। उन्होंने पाप को त्यागने और मसीह को अपने जीवनों के प्रभु के रूप में ग्रहण करने का अभी तक व्यक्तिगत फैसला नहीं किया है। वे "जन्म की अप्रत्याशित घटना" की वजह से यह कल्पना कर लेते हैं कि वे मसीही हैं - क्योंकि उनका जन्म मसीही परिवारों में हुआ है।

हमें ऐसे लोगों से बचना चाहिए जो सिर्फ नामधारी मसीही हैं, और ऐसे लोगों के साथ संगति करने की खोज में रहना चाहिए जो अपने अनुभव में मसीही बने हैं - जो अपने प्रतिदिन के जीवन में यीशु मसीह के पीछे चलना चाहते हैं।

जब हम मसीह को अपने प्रभु और मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार करते हैं, तो बाइबल कहती है कि हमारा ऊपर से नया जन्म होता है क्योंकि हम परमेश्वर की संतान बन गए हैं। अब परमेश्वर हमारा पिता है। और पार्थिव पिताओं की ही तरह, परमेश्वर भी हमारे लिए उन सब बातों का इंतज़ाम करने के लिए उत्सुक रहता है जिनकी हमें इस पृथ्वी पर ज़रूरत होती है - आत्मिक और शारीरिक दोनों रीति से।

प्रभु यीशु मसीह ने कहा कि अगर हमारे जीवनों में हम पहले परमेश्वर की बातों की खोज में लगे रहेंगे, तो पृथ्वी पर हमारी ज़रूरत की बाक़ी सभी वस्तुएं हमें यूँ ही मिल जाएंगी।

उसने कहा, "तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की ज़रूरत है। और अगर तुम उसे अपने जीवनों में पहला स्थान दोगे, और जैसा वह चाहता है वैसे रहोगे, तो वह ये सब वस्तुएं तुम्हें दे देगा।" (मत्ती अध्याय 6, पद 33)।

परमेश्वर की संतानों का एक सबसे बड़ा विशेषाधिकार उनका प्रार्थना करने का अधिकार है - सर्वशक्तिशाली परमेश्वर से बात करना और अपनी आत्मा में उसे बात करते सुनना। सामान्यतः परमेश्वर हमसे एक ऐसी आवाज़ में बात नहीं करता जिसे हम अपने कानों में सुन सकते हों। लेकिन वह हमारी आत्मा पर अपने शब्द की ऐसी छाप लगाता है, जो एक सुनी-जा-सकने-वाली आवाज़ जैसी ही स्पष्ट होती है। यीशु ने हमें उत्साहित किया कि हम

परमेश्वर से वे सारी बातें कह दें जो हमारे हृदयों को बोझिल करती हैं।

बहुत लोग ख़ामोशी से अपनी पीड़ाएं सहते रहते हैं, क्योंकि उनके पास ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होता जिसके साथ वे अपनी पीड़ा बाँट सकें। लेकिन परमेश्वर की संतान के पास स्वर्ग में उसका पिता है जिसके साथ वह अपना सब कुछ बाँट सकता है। वह अपने स्वर्गीय पिता पर इस बात का भी भरोसा कर सकता है कि वह उसके लिए उन सारी वस्तुओं का इंतज़ाम करेगा जिनकी उसे पृथ्वी पर ज़रूरत है।

प्रभु यीशु मसीह ने हमें सिखाया कि हम बातों को परमेश्वर से उन्हें बदलने के लिए कहने द्वारा उन्हें बदल सकते हैं। यह प्रार्थना का चमत्कार है। अगर कुछ बातें हमें और हमारे परिवारों को एक घातक रूप में नुक़सान पहुँचा रही हैं, तो हमें (भाग्यवादी होकर यह कहते हुए, कि जो कुछ होता है परमेश्वर की इच्छा में होता है), हमारे साथ होने वाली हरेक बात को स्वीकार नहीं कर लेना चाहिए। भाग्यवाद परमेश्वर की इच्छा के अधीन होने से अलग बात है। हमें उत्साहित किया गया है कि हम परमेश्वर से हमारी ज़रूरत की हरेक वस्तु माँगें।

बाइबल में यह प्रतिज्ञा है, "परमेश्वर तुम्हारी हरेक ज़रूरत को पूरा करेगा" (फिलिप्पियों अध्याय 4, पद 19)।

लेकिन हरेक समझदार पिता की तरह, परमेश्वर हमें वह हरेक वस्तु नहीं देगा जो हम उससे माँगते हैं, और वह हमें सिर्फ हमारी ज़रूरत की वस्तुएं ही देगा, और वे वस्तुएं जो वह देखेगा कि वे हमारे लिए अच्छी हैं।

परमेश्वर एक भला परमेश्वर है, और वह यह कभी नहीं चाहेगा कि उसके बच्चों के ऊपर कभी किसी तरह की बुराई आ पड़े।

इसलिए हम साहस के साथ उसके पास जा सकते हैं, और उससे कह सकते हैं कि वह हमें सारी बुराई से बचाए रखे।

संसार में ऐसे बहुत लोग हैं जो बहुत पीड़ा भोग रहे हैं क्योंकि दूसरे लोगों ने उन पर कुछ तांत्रिक विधि या जादू-टोन्हा किया हुआ है। अगर आपने अपना हृदय और जीवन मसीह को दे दिया है, तो ऐसे शैतानी काम फिर आपको नुक़सान नहीं पहुँचा सकते। आप प्रभु यीशु मसीह का नाम (जिसने शैतान को सूली पर हरा दिया है) शैतान को भगाने के लिए इस्तेमाल कर सकते हैं।

अगर आप यीशु के नाम में उसका सामना करेंगे, तो कोई तांत्रिक विधि या जादू-टोन्हा आपको या आपके बच्चों को नुक़सान नहीं पहुँचा सकता और न ही छू सकता है। अगर आपकी मुक्ति के लिए आप प्रभु यीशु मसीह के नाम को पुकारेंगे, तो इसी क्षण में, आपके ऊपर की गई हरेक तांत्रिक विधि का नाश किया जा सकता है।

बाइबल कहती है कि जब यीशु सूली पर मरा तब उसने शैतान को हराकर उसकी शक्ति को उससे ले लिया था। यह हो चुका है। लेकिन जैसा कि आपके पापों की क्षमा के बारे में है, वैसे ही यहाँ भी शैतान की हार आपके जीवन में तब तक एक सत्यचाई नहीं बन सकती जब तक आप उसे स्वयं स्वीकार नहीं करते।

“उसने (यीशु ने) मृत्यु के द्वारा उसको जिसे मृत्यु के ऊपर शक्ति मिली थी, अर्थात् शैतान को शक्तिहीन कर दिया, और उन्हें छुड़ा लिया जो जीवन-भर दास्त्व में पड़े थे” (इब्रानियों अध्याय 2, पद 14 व 15)।

“परमेश्वर के अधीन होकर दीन हो जाओ और फिर शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे सामने से भाग जाएगा” (याकूब अध्याय 4, पद 7)।

परमेश्वर की संतान बन जाने के बाद भी, परमेश्वर शैतान को हमें परखने की अनुमति देगा, क्योंकि हम इस तरह शक्तिशाली बन सकते हैं। लेकिन अब हमारे अन्दर परमेश्वर के पवित्र-आत्मा की सामर्थ्य वास करती है कि वह हमें शैतान का सामना करने और उसके सारे हमलों पर प्रबल होने की शक्ति दे।

परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा नहीं की है कि उसके बच्चों के पार्थिव जीवन में परीक्षाएं और समस्याएं नहीं होंगी। नहीं।

परमेश्वर चाहता है कि उसके बच्चे मज़बूत और ताक़तवर हों, ऐसे नहीं जैसे धनवान माता-पिता के बिगड़े हुए बच्चे होते हैं जिन्हें बचपन से ही बहुत लाड-दुलार में पाला गया हो। वह ऐसा होने देता है कि जैसे दूसरे मनुष्य परीक्षाओं और समस्याओं में से गुज़रते हैं, वैसे ही हम भी उनमें से गुज़रें।

लेकिन उन्हीं परीक्षाओं में हम परमेश्वर को ज़्यादा अच्छी तरह जान पाते हैं, और हम हरेक स्थिति में उसकी चमत्कारिक मदद पाते हैं।

अध्याय 8

अनन्त के बारे में वास्तविक सत्य

वह जो परमेश्वर की संतान बन गया है, उसके लिए अनन्त की बातें समय में हो रही बातों से ज़्यादा मूल्यवान होती हैं। उसके लिए स्वर्गीय मूल्य पार्थिव मूल्यों से ज़्यादा बढ़कर हो जाते हैं।

जब प्रभु यीशु मसीह 2000 साल पहले मृतकों में से जीवित हुआ और स्वर्ग में ऊपर चढ़ गया, तब उसने पृथ्वी पर वापिस लौटने का वादा किया था।

इसे मसीह का "दूसरा आगमन" कहते हैं।

इस जगत के इतिहास में यह दूसरी बड़ी घटना होगी।

परमेश्वर की एक संतान को यह अहसास रहता है कि उसे उस दिन, जब मसीह पृथ्वी पर लौटेगा, परमेश्वर को अपने जीवन का लेखा देना है।

हमारी अनन्त की यात्रा में, यह संसार सिर्फ एक गुज़रता हुआ दौर है। हम यहाँ सिर्फ परखे जाने के लिए हैं। परमेश्वर हमारे जीवन के हालातों में हमें यह देखने के लिए परख रहा है कि हम स्वर्ग की अनन्त बातों को चुनाव करेंगे या पृथ्वी की अस्थाई (नाश हो जाने वाली) बातों को चुनेंगे।

अगर हम समझदार हैं, तो हम उन बातों का चुनाव करेंगे जिनका स्वर्ग में अनन्त मूल्य है।

एक छोटा बच्चा एक 500 के नोट की बजाय एक चमकीले व रंगीन कागज़ को चुनेगा - क्योंकि एक बच्चे को मूल्यों की समझ

नहीं है। जब हम स्वर्ग और अनन्त की बातों की बजाय पृथ्वी की बातों का चुनाव करते हैं, तो हम उस छोटे बच्चे की तरह ही व्यवहार करते हैं।

परमेश्वर ने हमें यह बिलकुल स्पष्ट रूप में बता दिया है कि यह संसार और जो कुछ इसमें है वह मिटता जाता है।

इसलिए इस संसार की बातों के लिए जीना ऐसा ही है जैसे अपना धन ऐसे बैंक में रखना जो जल्दी ही टूट कर बिखरने वाला है।

एक समझदार व्यक्ति अपना धन ऐसे बैंक में रखता है जो स्थिर है। इसी तरह, जो लोग वास्तव में समझदार हैं, वे उन बातों के लिए जीते हैं जिनका अनन्त मूल्य है - वे बातें जिनका सम्बंध हमारे चरित्र से है जैसे शुद्धता, प्रेम, भलाई, क्षमा, नम्रता आदि, क्योंकि पृथ्वी से जाते समय हम अपने साथ सिर्फ यही ले जा सकते हैं।

बाइबल बताती है कि जो लोग अपने पापों से मन फिराए बिना ही मर जाएंगे, उनका अंत बहुत ही भयानक होगा।

“मनुष्यों का एक बार मरना और फिर न्याय का होना तय किया गया है” (इब्रानियों अध्याय 9, पद 27)।

एक बार जब मनुष्य मर जाता है, तब उसके पास बदलने का कोई मौक़ा नहीं होता। परमेश्वर भी एक मनुष्य को नहीं बदल सकता क्योंकि वह एक किसी को उसकी इच्छा के बिना नहीं बदल सकता। जब हम स्वयं, इसी पृथ्वी पर, अपनी इच्छा से अपने आपको बदलना चाहते हैं, परमेश्वर हमें सिर्फ तभी बदलता है।

भविष्य में से एक ऐसा दिन हमारी तरफ आ रहा है, जब पृथ्वी पर जन्मा हरेक मनुष्य मृतकों में से जी उठेगा कि वह परमेश्वर को अपने जीवन का लेखा दे। बाइबल कहती है कि मृतकों का जी-

उठना दो बार होगा - अर्थात्, वे मृत देह जो मिट्टी बन गई हैं, परमेश्वर की अलौकिक सामर्थ्य द्वारा फिर से देह बन जाएंगी।

पहला जी-उठना उनका होगा जो धर्मी हैं - वे जो मसीह को अपने मुक्तिदाता के रूप में स्वीकार कर चुके हैं, जिनके पाप क्षमा हो चुके हैं, और इस प्रकार, जो पृथ्वी पर रहते हुए परमेश्वर की संतान बन गए हैं।

दूसरा जी-उठना उनका होगा जिन्होंने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर द्वारा दी गई क्षमा को अस्वीकार किया था, और इस वजह से, अपनी पापमय दशा में ही मरे थे। अगर एक व्यक्ति अपने पापों से मन फिराए बिना ही मरता है और अगर उसके पाप मसीह द्वारा क्षमा नहीं किए गए होते, तो एक दिन वह परमेश्वर के न्यायासन के आगे खड़ा रहेगा और उसके पूरे जीवन का अवलोकन किया जाएगा। तब सारे सृष्टि के सामने यह साबित हो जाएगा कि वह उसके पापों के लिए अनन्त दण्ड के योग्य है।

और उस समय शैतान भी, जिसने सारी सृष्टि में बुराई की शुरूआत की थी, और जिसकी वजह से मनुष्य पाप के मार्गों में चले थे, उस समय अनन्त दण्ड पाएगा।

लेकिन वे जिन्होंने अपने आपको दीन किया था, अपने पापों का अंगीकार करने के बाद उन्हें त्याग दिया था, और सूली पर हुई मसीह की मृत्यु द्वारा परमेश्वर के क्षमा के प्रस्ताव को स्वीकार किया था, वे परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करेंगे, और उसके साथ अनन्त में सर्वदा वास करेंगे।

स्वर्ग एक शुद्धता, शांति और आनन्द की जगह है जहाँ स्वर्गदूत और मानव-जाति के उनके पापों में से बचाए गए लोग परमेश्वर की आराधना और स्तुति करेंगे, और अनन्त में उसकी विभिन्न प्रकार से सेवा करेंगे।

स्वर्ग वह जगह है जहाँ हमारा अपने उन प्रियजनों के साथ पुनर्मिलन होगा जो हमसे पहले पृथ्वी पर से गए थे, अर्थात् वे लोग जिन्होंने परमेश्वर की संतान के रूप में अपनी मुक्ति के लिए मसीह में भरोसा किया था।

परमेश्वर की सत्यची संतान उस महिमा से भरे दिन की राह देखती है जब वह हमेशा के लिए परमेश्वर के साथ होगी।

और अब जबकि आप वास्तविक सत्य जान गए हैं, तो आपका क्या जवाब है? क्या आपने प्रभु यीशु मसीह से वह प्रार्थना की थी कि वह आपके पापों को क्षमा कर दे और आपको परमेश्वर की संतान बना दे? इस समय जबकि परमेश्वर आपके हृदय से बात कर रहा है, तो आप वह प्रार्थना दोहरा सकते हैं। हममें से कोई यह नहीं कह सकता कि हम कब मरेंगे और इस पृथ्वी को छोड़ जाएंगे। आने वाले दिनों में से कोई एक दिन इस पृथ्वी पर हमारा अंतिम दिन होगा। उस दिन के आने से पहले, यह सुनिश्चित कर लें कि आपके पाप क्षमा हो गए हैं, और आप परमेश्वर से मिलने के लिए तैयार हैं।

पुस्तक के विषय में

क्या आप जानते हैं ?

A. कि एक अच्छे परमेश्वर द्वारा बनाई गई इस सृष्टि में बुराई की शुरूआत कैसे हुई?
B. कि आपका विवेक आपकी आँख की तरह है?
C. कि आप काले जादू और तांत्रिक विधियों की शक्ति को तोड़ सकते हैं?
D. कि आप परमेश्वर के साथ एक प्रेमी पिता की तरह बात कर सकते हैं?
E. कि आप परमेश्वर की मदद से अपनी हरेक समस्या पर जय पा सकते हैं?

इस पुस्तक में इन बातों के जवाब हैं।

ज़ैक पूनैन भारतीय नौसेना के एक भूतपूर्व अधिकारी हैं। वे 1975 से भारत और दूसरे स्थानों में कलीसिया की स्थापना करने की सेवकाई कर रहे हैं। वे अनेक देशों में जीवन से संबन्धित गहरे प्रश्नों की सभाओं में भी सेवारत् हैं। वे और उनकी पत्नी दक्षिण भारत के बैंगलोर नगर में रहते हैं। उनके चार विवाहित पुत्र हैं और वे भी उनकी पत्नियों के साथ प्रभु के पीछे-पीछे चलते हैं।

(ज़ैक पूनैन का चित्र)

www.cfcindia.com

cfc@cfcindia.com